SJIF 2015 : 3.801
ISSN: 2348-3083
An International Peer Reviewed & Referred
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR
HUMANITY SCIENCE & ENGLISH LANGUAGE

फूल इमारते और बन्दर उपन्यास, एक ईमानदार आफीसर की संघर्षयात्रा

प्रा.पाण्डेय जे . आर .

द.ग.तटकरे कालेज , मांनगाँव रायगड

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना :

समकालीन उपन्यासकारो में गोबिंद मिश्र का एक बड़ा नाम है| उन्होंने १९६५ से लेकर आजतक लिखते जा रहे है |कुल मिलाकर अब तक १२ उपन्यास प्रकाशित हो चुके है |उनके उपन्यासों का नाम है –वह अपना चेहरा ,उतरती हुई धुप ,लाल पीली जमीन,हुजुर दरबार ,तुम्हारी रोशनी में ,धीरे समीरे ,पाच आगनो वाला घर ,धूल पौधों पर ,अरण्य तंत्र फूल इमारते और बन्दर उपन्यास मिश्र जी ने २००० इसवी में लिखा था |यह उनका आठवा उपन्यास है |इस उपन्यास में एक सवेंदनशील अधिकारी किस तरह अपने नैतिक पतन को देखता है |आजकल अधिकारी कार्य करने की जगह पावर अपनी तरफ खीचने में लगे है |अपना काम न करके दुसरे के विभाग में कितना टांग लगाये यही सर्वोपरी समझा जाता है |

सरकार का मतलब है सिर्फ मंत्रालय और सचिवालय ,सरकार माने जो कुछ भी कर सकती है |मोहंती का विभाग सरकार का एक सामान्य सा विभाग है ,पर है बड़ा जो की सबकी नज़र में है | श्री गोपीकृष्ण मोहंती विभाग के बोर्ड में सबसे

सीनियर है लेकिन उनके अध्यक्ष बनने में बहुत संशय है क्योकि वर्तमान अध्यक्ष व बोर्ड के मोहंती से जूनियर सदस्य माताप्रसाद भी इस पद के दौड़ में लगे है | मोहंती के विरोध में मंत्री के पास दुनियाभर की शिकायते भेज दी गयी है ताकि मंत्री मोहंती के नाम का प्रस्ताव न करे |शिकायत यह भी है की मोहंती ने अपनी बेटी की शादी में अनाप –शनाप खर्च किये थे,जबकि शादी इतनी साधारण हुई थी की लोग कहते थे की किसी क्लर्ककी बेटी की शादी थी |

उन्होंने आजीवन अपने को स्वच्छ्र रखा ,उस समय में जब ईमानदार होना बेवकूफी समझा जाता था |वे हमेशा ईमानदार ईमानदार बने रहे लेकिन आज उसी बात को लेकर उनमे खोट निकाला जा रहा है |क्या प्रेम,करुणा,दुसरो के लिए सहानुभूति महसूस करना बुरी बाते है |कुर्सी को पाने के लिए अफसर लोग कितने चापलूस झूठे हो जाते है |नैतिकता सिर्फ दिखावा रह जाता है |वर्तमान अध्यक्ष तो मोहंती से कहते है की “मेरा बस चले तो छ;माह अध्यक्षता कर शेष छ माह के लिए अपने बैचमेट को अध्यक्षता करने के लिए दे दू |”लेकिन वैसा नहीं करते है |सहयोगी रिटायर हो जाता है ,उस पर तुर्रा यह यह है की एक्सटेंशन के लिए अपनी फाइल चला दी है |मोहंती को भी अध्यक्ष नहीं बनने देना चाहते है |आखिर ऐसा क्यू है |मोहंती के बाद वरिष्ठता में तीन नम्बर निचे मायाप्रसाद है,वे तो तीनो को पछाड़कर अध्यक्ष बनने का सपना देखते है |मायाप्रसाद को चापलूसी पैदायशी संस्कारो से मिली है |उसके लिए जीवन में सबसे बड़ी चीज है कैरिअर ..उसी की बाते ,उसी के लिए घाते|उपरवाले की जी हुजूरी और चमचागिरी तो नीचेवाले के लिए हुड़क और घुड़क |बला का महत्वाकांक्षी है |

बड़े पद किसके पास आनेवाला है यह देखकर लोग जी –हुजूरी में लगने वाले अफसर छोटे मोटे नेताओ उद्योगपतियो की लार चूने लगती है |मोहित, रंजन, दीनदयाल,पृथ्वीसिंह ,अविनास कपूर ऐसे ही लोग है |दीनदयाल का पत्रकारी पेशा सिर्फ दिखावा है,वह कैसे बड़े अफसरों के करीब आये अपना कमिसन बनाये इसी में लगा रहता है |पृथ्वीसिंह राजनेता और उद्योगपति साथ साथ है |पृथ्वीसिंह अपने को आज का चाणक्य समझते है ,लेकिन ईमानदारी से देखा जाये तो आज के सत्ता के दलाल है |दीनदयाल, पृथ्वीसिंह,रंजन,अविनास कपूर ईमानदार अफसर को ईमानदार रहने नहीं देंगे|दोस्ती का दबाव डालते है |कैबिनेट सचिव समरसिंह शरीर से दुबले पतले है ,लेकिन अफसर है रोबीले |उन्हें बराबर इस बात का ध्यान रहता है की भारत के सबसे बड़े अफसर है |कोई भी ब्यक्ति सीधे उनसे नहीं मिल सकता ,बड़े से बड़े अफसरों को मिलने के लिए घंटो इंतजार कराते है |

बड़े अफसरों में मोहंती, गीताकृष्णनन,रामचंद्रन ,जैसे लोग भी है ,लेकिन इनकी संख्या बहुत कम है |मोहंती अपने प्रमोशन के लिए क्लर्क से लेकर उद्योगपति, ज्योतिषी.पत्रकार प्रधानमंत्री तक सब से मिलते है,लेकिन काम एक क्लर्क की चालाकी से हो जाता है |जो की फ्री में करता है,तो दूसरी तरफ तीन करोड़ की रिश्वत का आफर है |एक तरह से अध्यक्ष पद का नीलामी हो रहा है |मोहंती अपने पद के लिए रिश्वत नहीं दे सकते है |पैसे देकर वे आपको पद पर बिठाएंगे और फिर आपका भरपूर इस्तेमाल भी करेंगे|

मोहंती सिफारीश करने करने के चक्कर में अपने ही बुने जाल में मकड़ी की तरह फ़स गए है ,वे कदम दर कदम निचे फिसलते जा रहे है |अगर मोहंती अध्यक्ष पद

नहीं बन पाए तो उन्हें अयोग्य, नाकाबिल, नालायक ,न जाने क्या –क्या घोषित कर दिया जायेगा | उन्हें सदस्य के पद से भी इस्तीफा देना पड़ सकता है |मोहंती किसी के गुलाम या उसका आदमी बनकर जीना नहीं चाहते है |आजकल दिल्ली में प्रधानमंत्रीको लायल आदमी चाहिए ,वफादार नौकर चाहिए |जीवन –भर के लिए वह उसका आदमी बन जाये ,पालतू कुत्ता यह मोहंती को मंजूर नहीं है |जो कुछ भी राजनेता कहे गलत या सही वह करने को तैयार |वह अपने घर में गाँधी ,नेहरु की जगह अपने सर्वेसर्वा की तस्वीर टांगकर रखेगा |

प्रधानमंत्री से मिलने जब मोहंती गए तो अपना चेहरा हमेशा अख़बार के पीछे रखे रहे डरते रहे की कोई पहचान वाला देख न ले क्यूकि उनके अन्दर अभी नैतिकता बनी हुई है |वे सोचते है की एक पद की खातिर क्या वे अपनी स्वत्रता खो देंगे |वह भी इन लोगो के गुलाम जिनके कोई विस्वास,कोई मूल्य नहीं है |बहुत शर्मातेहुए प्रधानमंत्रीसे कहा की 'मुझे अपना ही आदमी समझे |'राहुल मोहंती को समझाता है –'आपको जरुर अटपटा लग रहा होगा ,लेकिन जब अपना काम पड़ा तो गधे को भी बाप बनाना पड़ता है |'

मोहंती सोचते है की अपनी पूरी नैतिकता और निष्ठा से काम करता हुआ एक साधारण क्लर्क उतना आदरणीय नहीं है जितना एक भ्रष्ट उच्च पदाधिकारी | प्रधानमंत्री के प्रधान सचिव रामचंद्रन है जो है तो एकदम ईमानदार लेकिन दुर्भाग्य यह है की रामचंद्रन जैसे अधिकारी निचे के खीचतान,रस्साकसी से एकदम अलग रखे है |प्रधानमत्री को कोई अच्छी सलाह नहीं देते |वे सिर्फ दिखाते है की सब कुछ कायदे से कानून के अनुसार ही चल रहा है |वह चुपचाप अपना काम करते है |जिस रोज रामचंद्रनजैसे लोग मोहंती से मिलते है तो सोचते है की

आज अच्छा काम हुआ |मोहंती अपने को कोसते है की किस सड़े पानी में वे पिछले दो महीने से कीड़े की तरह बुदबुद कर रहे है,न डूबते है न तैरते है,बस तिर रहे है |मोहंती का असली काम प्रसाद नामक छोटा क्लर्क करता है ,जिसके चतुराई से मोहंती विभाग के अध्यक्ष बन जाते है |फिर तो चापलूसों की फौज घर पर फूलो की एक से बढकर एक गुलदस्ते पहुचने लगते है |मोहंती सोचते है की जो फूल देकर बहुत अपने बन रहे है उन्ही से सबसे ज्यादा तकलीफ मिलने वाली है |मोहंती के मित्र अपनी –अपनी सिफारिशे लेकर पहुचने लगते है ,और कहते है की,'अच्छे और बढ़िया लोगो को सही –सही जगह फिट कर डालिए |'

'चुन –चुनके ऐसे लोगो को महत्वपूर्णजगह पर बैठाया जाये जो रिटायर होने के बाद भी अपना ख्याल करने वाले हो...माने लायल अफसर |'

'आप बाकायदा प्रोजेक्ट बना लीजिये |आपके पास १२ महीने है,तो माने १२ करोड़ ,हर महीने एक करोड़|यह रकम रिटायरमेंन्ट के बाद काम आयेंगी|'

मोहंती परेशानहै की क्या अध्यक्ष पद पैसा कमाने के लिए पाए है या देश सेवा के लिए | मंत्री मोहंती को पसंद नहीं करता क्यूकि वे उसकी बाते सब सही नहीं मानते है |पहली ही बैठक से मंत्री खिलाफ हो गया |विभाग का सचिव अलग से नाराज है |आखिर मोहंती किस –किस के खिलाफ लढ़े|मंत्री उनके हस्ताचार से गलत काम कर रहा है |मोहंती का सचिव डी.वी. मंत्री को पूरा मदत कर रहा है |मोहंती को डी .वी .जैसे सचिवो पर दया आती है ,कि इतने बड़े अफसर होकर भी मंत्री के गुलाम बनने को बैचन है |ज्यादा पढ़ा-लिखा ब्यक्ति समाज-देश का न होकर भ्रष्ट मंत्री के फायदे का क्यू सोच रहा है |बिभाग का मंत्री एक भ्रष्ट महिला

ऑफिसर को पदोन्नति देना चाह रहा है जबकि उस महिला पर गंभीर आरोप है ,मोहंती उसका पदोन्नति नहीं चाहते है |लेकिन मंत्री के आदेश पर पदोन्नति करना पड़ जाता है |मोहंती मंत्री को समझाते है ,'बहुत संगीन आरोप है ,सर;उनके होते हुए हम कैसे कह दे की वह ईमानदार है|हमें अपनी सर्टिफिकेट में वह लिखना पड़ेगा |'

मोहंती सोचते है पदोन्नति पाकर वह महिला अधिकारी और पैसे बनाएगी ,कितने गलत काम और करेगी |किसी ईमानदार अधिकारी का नंबर पीछे हो जायेगा |संसद समिति के सांसद पूरनमल मोहंती को अपमानित कर दबंगई से अपने लोगो को दिल्ली में ही रहना देना चाहते है |मोहंती सोचते है की पैतीस वर्षो की नौकरी करने का फायदा है की वे लोगो की गलियाँ और अपमान सहे |विभाग के लोग भी मोहंती का साथ नहीं देते है |मोहंती चाहते है कि विभाग के भ्रष्टलोगो के खिलाफ और सख्त होना चाहिए ,लेकिन मंत्री भ्रष्ट लोगो लोगो को ही बढ़ावा देता है |मोहंती को अपने मन का न पाकर विभाग सचिव व और मंत्री उनका तबादला करना चाहते है |अफसरों की दुनिया में खोखली हंसी ,खोखली दोस्ती रहती है|जो आदमी बेवजह मुस्कराए वह खतरनाक होता है |अफसरों के स्वाभाव में सूखापन होता है |बड़े अधिकारी का अपना ब्यक्तित्व कुछ नहीं होता |अफसरों का राजनीतिकरण हो चुकाहै|जो एक ज़माने के अच्छे विद्यार्थी थे वे आज मंत्रियो के सामने दुमहिलाने वाले गुलाम कुत्ते बन गए है |आधी रात्रि को मोहंती का तबादला दुसरे विभाग में कर दिया गया ताकि मोहंती कुछ कर न पाए |वे सोचते है की जब नोकरी की है तो उसके अनुशासन में रहना होगा|सरकार जहां भेजे वहां जाओ जो काम दे करो ...वर्ना नोकरी छोड़ दो |महंती सोचते है की अपनी तरफ से अच्छा काम करते रहो आगे लोगो की मर्ज़ी |

निष्कर्स-मोहंती स्वाभिमानी आफिसर थे ,वे किसी ब्यक्ति का नोकर बनकर नहीं जीना चाहते थे |वे भारत सरकारके नोकर थे |मोहंती सविधान के तहत कम करने के पछधर थे |किसी अफसर या मंत्री के इशारों पर चलने वाले नहीं थे,जिसके कारण उनको पग –पग पर अपमान सहना पड़ा|मोहंती अपने सिद्धांतो से कभी समझोता नहीं किये |इस उपन्यास के माध्यम से गोविन्द मिश्र जी ने भारत सरकार के मंत्रियो अफसरों की असली पोल खोल दी है |मोहंती जैसे ईमानदार अफसर को आजकल कितने पापड़ नोकरी बचाने के लिए करने पड़ रहे है उसे बताया है |फूल इमारते और बन्दर उपन्यास पढ़कर सहज अनुमान लगाया जा सकता है |निसंदेह इसे दिखाने में गोविन्द जी सफल हुए है |

संदर्भ ग्रन्थ

फूल इमारते और बन्दर–डॉ.गोविन्द मिश्र

आकलन गोविन्द मिश्र–डॉ.रामजी तिवारी

गोविन्द मिश्र :सृजन के आयाम–डॉ.चंद्रकांत वान्दिवदेकर

मुझे बाहर निकालो–डॉ.गोविन्द मिश्र